शब्दशक्ति

शब्द और अर्थ का परस्पर संबंध रहा है। सार्थक वर्णों के समूह को 'शब्द' कहते हैं। मतलब अर्थपूर्ण ध्वनिसमूह को 'शब्द' कहा जाता है। संस्कृत आचार्यों ने शब्द और अर्थ पर बल देकर ही काव्य का स्वरूप स्पष्ट कया है। शब्द और अर्थ को पानी और शहर की उपमा देते हुए तुलसीदास कहते हैं

" गरा अर्थ जल बी च सम, कहियत भन्न न भन्न ।"

अर्थात पानी में उठनेवाली लहर पानी से अलग दिखाई देती है। वास्त वक रूप में अलग नहीं, बल्कि पानी का अंग है। तात्पर्य शब्द का महत्व तथा अस्तित्व उसके अर्थ पर निर्भर है।

शब्दशक्ति से तात्पर्य :

साहित्यकार शब्द की अपार संपन्नता से अपनी वाणी को सजाता, संवारता तथा सम्पन्नता भी प्रदान करता है। शब्द की यह सम्पन्नता जिस पर निर्भर है वह 'शब्दशक्ति' है। शब्द का अर्थबोध करनेवाली शक्ति 'शब्दशक्ति' कहलाती है। शब्द में एक या कई अर्थ छिपे होते हैं, समय और स्थिति के अनुसार वे वशेष कारण से अर्थ को व्यक्त करते हैं।

संस्कृत आचार्यों ने 'शब्दार्थः सम्बन्धः शक्ति' कहकर यह स्पष्ट कया क शब्द के जिस व्यापार से अर्थ का बोध होता है उसे 'शब्दशक्ति' कहते हैं। शब्द के अनेकार्थ होते हैं जैसे कुत्ता याने लाचार, वफादार आदि अर्थ होते है। गधा याने मूर्ख, मूर्खता का प्रतीक आदि अर्थ होते हैं। स्पष्ट है क कुत्ता, गधा शब्द का प्रयोग जिस व्यापार सै

वाक्य में होगा उसी का अर्थ उसी रूप में परिवर्तित होगा- यही शब्दशक्ति है। संक्षेप में शब्द का अर्थ बोध करानेवाली शक्ति ही 'शब्दशक्ति' है।

शब्दशक्ति

शब्दशक्ति के भेद

शब्द कसी न कसी अर्थ का वाहक होता है। साहित्यकार अपनी रचना में प्रतिभा के बलपर अनुभूति को वाणी या शब्दाकार देता है। इस लए साहित्यकार को शब्दशक्ति का ज्ञान होना अनिवार्य है। क्यों क शब्द के अर्थ पर काव्य की महानता निर्भर है।

संस्कृत आचार्यों ने शब्दशक्ति के प्रमुखतः तीन भेद माने हैं1) अ भधा, 2) लक्षण, 3) व्यंजना। इन शब्दशक्तियों के अनुरूप शब्द और अर्थ तीन तरह के होते हैं।

1) वाचक शब्द से वाच्यार्थ
2) लक्षक शब्द से लक्ष्यार्थ
3) व्यंजक शब्द से व्यंग्यार्थ

अर्थात् शब्द में छिपे अर्थ के आधार पर शब्दशक्ति के तीन भेद होते हैं।

शब्दशक्ति/अ भधा शब्दशक्ति

जिस शब्दशक्ति द्वारा शब्द के मुख्य अर्थ का बोध होता है, उसे अ भधा शब्दशक्ति कहते हैं। इसे 'मुख्या' या 'अ ग्रमा' भी कहा जाता है। जिस शब्द से मुख्यार्थ का बोध होता है उसे वाचक शब्द कहलाया जाता है, तथा मुख्यार्थ को वाच्यार्थ। वाच्यार्थ को 'संकेतितार्थ' भी कहा जाता है। व शष्ट शब्द को व शष्ट अर्थ-संकेत क्यों प्राप्त हुआ, इस सम्बन्ध में अनेक वद्वानों ने वस्तृत वचार- वमर्श कया है। डॉ. भ गैरथ मश्र ने इसकी परिभाषा देते हुए लखा है-

"अ भधा वह शब्दशक्ति या शब्द का व्यापार है, जिसमें साक्षात् संकेति या मुख्य अर्थ का बोध होता है।" जैसे- 'पुस्तक' शब्द का 'पुस्तक' वस्तु से या 'गाय' शब्द का गाय प्रा ण से संकेत संबंध है। जब हम कसी शब्द का उच्चारण करते हैं, तो तत्काल उसका अर्थ श्रोता के मन पर अं कत हो जाता है। इस संबंध का कोई तर्कसंगत आधार नहीं है। यह मात्र सामाजिक परंपरा से जुड़ा है।

अब प्रश्न यह उठता है क इस संकेतित अर्थ का ज्ञान हमें कैसे होता है? शब्द-बोध के साधनों से हमें शब्द के संकेतित अर्थ का बोध होता है। वद्वानों ने इन साधनों- 1) व्याकरण 2) उपमान 3) कोश 4) आप्तवाक्य 5) व्यवहार 6) पद का सानिध्य 7) वाक्यशेष 8) वव ृ त्त को निर्धारित कया है।

संक्षेप में अ भधा शक्ति के दवारा जिस अर्थ का बोध होता है उसे वाच्यार्थ, मुख्यार्थ, संकेतार्थ या अ भधार्थ कहा जाता है।

शब्दशक्ति/अ भधा शब्दशक्ति

1) योग अ भधा

योग से तात्पर्य है व्युत्प त्त। व्युत्प त्त के सहारे शब्द के मुख्यार्थ का बोध कराानेवाली शक्ति ‘योग अ भया' कहलाती है। और इस तरह के वाचक शब्द 'यो गक' । यो गक शब्द प्रकृति और प्रत्यय के योग से बने होते हैं। व्युत्प त्त के सहारे इन शब्दों के मूल अवयवों को अलग-अलग कर उनके अलग-अलग अर्थ के योग से मुख्यार्थ का बोध कया जाता है।

उदा. तरूजी व = तरू+ जी व

पशुतुल्य पशुतुल्य आदि।

शब्दशक्ति/अ भधा शब्दशक्ति

2) रूढ अ भधा

कुछ शब्दों का मुख्यार्थ बोध व्युत्प त्त से न होकर रूढि से होता है। व शष्ट अर्थ संकेत रूढिद्वारा प्राप्त हुआ होता है, ऐसा सार्थक ध्वनि समूह 'रूढ शब्द' कहलाता है। ऐसे शब्दों की कोई व्युत्प त्त नहीं होती। इनका मुख्यार्थ रूढि से होता है। अतः 'रूद अ भधा' उस शब्दशक्ति को कहा जाए, जिसके द्वारा शब्द के रूढि प्रदत्त मुख्यार्थ का बोध हो जाता है।

उदा. गृह, तरू, चंद्र, पशु आदि।

शब्दशक्ति/अ भधा शब्दशक्ति

3) योगरूढ अ भधा

कछ यो गक शब्द ऐसे होते हैं, जिनके व्युत्प त्तपरक अर्थ भी होते हैं, ले कन उससे संद र्भत एक अन्यार्थ रूढि द्वारा मुख्यार्थ बन जाता है। इस मुख्यार्थ का बोध करनेवाली शक्ति 'योगरूढ अ भधा' कहलाती है। उदा. 'पंकज' । शब्द का व्युत्प त्तजनक अर्थ होगा पंक + ज याने 'कीचड में उत्पन्न' । कीचड में उत्पन्न कई वस्तुएँ होती हैं, ले कन रूढिद्वारा 'पंकज' का अर्थ 'कमल' होता है।

उदा. गरीधारी, जलद, पशुपति आदि।